शुल्क १५ वर्ष
३१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति १०/- रुपये
वार्षिक ३००/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष २३ : अंक २७ : नई दिल्ली : २६ सितम्बर-५ अक्टूबर २०१७

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण और महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि श्रमणियां कोलकाता महानगर के राजरहाट में स्थित भव्य 'महाश्रमण विहार' में सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। नवरात्र के संदर्भ में संपूर्ण कोलकाता महानगर में उत्सवमय माहौल बना हुआ है। स्थान-स्थान पर निर्मित भव्य एवं कलात्मक पूजा पंडालों को देखने के लिए प्रतिदिन लाखों लोगों की भीड़ उमड़ती है। ये पंडाल स्थानीय संस्कृति और कला के साथ-साथ कलाकारों के हुनर को स्पष्ट दर्शाते हैं। आचार्यप्रवर के मंगल सान्निध्य में तेरापंथ महासभा के तत्त्वावधान में २७ सितम्बर से आयोजित राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर में ४०० से अधिक बालक-बालिकाएं संभागी बने हुए हैं।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण कोलकाता में

जैन विद्वत् संगोष्ठी का समायोजन

१४ सितम्बर। जैन विश्वभारती संस्थान 'मान्य विश्वविद्यालय' लाडनूं के अनुशास्ता की मंगल सन्निधि में आज से जैन विश्वभारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय के द्वारा 'वैश्विक समस्याओं के समाधान में जैन दर्शन की भूमिका' विषय पर जैन विद्वत् संगोष्ठी समायोजित हुई। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में इस संदर्भ में जैन विश्वभारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर श्री बच्छराज दुगड़, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति श्री कुलदीप अग्निहोत्री, जैन विश्वभारती मान्य विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति प्रोफेसर डा. महावीरराज गेलड़ा, जैन विश्वभारती संस्थान, जैन विद्या विभाग के पूर्वाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. दयानंद भार्गव तथा मैसूर से समागत प्रोफेसर शुभचंद्र जैन ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में चार सुगतियों--सिद्ध सुगति, देव सुगति, मनुज सुगति और सुकुल में जन्म को विश्लेषित किया। आचार्यप्रवर ने अपने आगमाधारित प्रवचन के पश्चात् 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान शृंखला के अंतर्गत आचार्य भिक्षु के अनशन से पूर्व की स्थिति का वर्णन किया।

जैन विद्वत् संगोष्ठी के संदर्भ में अनुशास्ता आचार्यप्रवर ने कहा--'वैश्विक समस्याओं के समाधान में जैन दर्शन की भूमिका' विषय पर विद्वत् संगोष्ठी का प्रसंग है। विद्वान व्यक्ति विशिष्ट होता है। वैदुष्य प्राप्त कर लेना अपने आप में उपलब्धि होती है। जो आदमी सुगति की दृष्टि से ध्यान देता है, वह स्वयं वैश्विक समस्याओं के समाधान का एक हिस्सा बन जाता है। दूसरा कौन क्या करे और क्या न करे, यह अलग बात है।

जैन दर्शन का ज्ञान रखने वाले कुछ-कुछ विद्वान हैं। ज्ञान की गहराई में पैठना बड़ी बात होती है। जो बात आज मस्तिष्क में नहीं आई है, वह बात पांच साल बाद भी आ सकती है। इस दृष्टि से आदमी को अध्ययन और शोध करते रहना चाहिए। शोध में यथार्थ बोध हो। व्यक्ति जहां कहीं आग्रह में अड़ जाता है, दुराग्रह कर लेता है, वहां सत्य शोध में बाधा आ जाती है। शोध के लिए नितांत आवश्यक है कि कहीं भी दुराग्रह के रूप में पकड़ नहीं होनी चाहिए। अनाग्रह भाव से खोजें कि यथार्थ क्या है? आज जो जान रहे हैं,

दस साल बाद मस्तिष्क में उससे भिन्न नई बात भी आ सकती है। जहां अनाग्रह है और सच्चाई को खोजने का प्रयास है, वहां सच्चाई प्रकट हो सकती है, अवगत हो सकती है, आत्मसात् हो सकती है।

विद्वान व्यक्ति अपने ज्ञान को यथौचित्य दूसरों को भी दे। क्योंकि दुनिया में अन्न का दान हो सकता है, औषध का दान हो सकता है, अर्थ का दान हो सकता है, इसी प्रकार ज्ञान का भी दान हो सकता है। जिसके पास ज्ञान है, वह अपना ज्ञान दूसरों को देने का प्रयास करे तो दीपक से दीपक जलाने वाली बात हो सकती है, वह ज्ञान दूसरों को भी ज्योतित करने वाला बन सकता है।'

कार्यक्रम में प्रोफेसर डॉ. दयानंद भार्गव ने अपनी नवीन कृति 'कंट्रीब्यूशन ऑफ आचार्य महाप्रज्ञ टू इंडियन कल्चर' तथा प्रोफेसर डॉ. गेलड़ा ने अपनी पुनर्मुद्रित कृति 'जैन आगमों का सामान्यज्ञान' पूज्यप्रवर को समर्पित की।

पूज्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'दयानंदजी भार्गव की पुस्तक 'कंट्रीब्यूशन ऑफ आचार्य महाप्रज्ञ टू इंडियन कल्चर' लोकार्पित हुई है। आशा करते हैं कि यह एक अच्छी पुस्तक ही होगी। इसे पढ़कर पाठक को कुछ विशेष खुराक प्राप्त करने का मौका मिले, यह काम्य है। प्रोफेसर डॉ. महावीरराज जी गेलड़ा की जैन आगमों के संदर्भ में पुस्तक पुनर्मुद्रित होकर आई है। करीब छह आगमों का उल्लेख इसमें प्रतीत हो रहा है। इस पुस्तक को पढ़ने से गृहस्थ लोग भी कुछ आगमों के बारे में जानकारी प्राप्त करने का प्रयास कर सकते हैं। अच्छी जानकारी प्राप्त हो, यह काम्य है।'

जैन सिद्धान्तों में है समस्याओं का समाधान

१५ सितम्बर। पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य में जैन विश्वभारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित जैन विद्वत् संगोष्ठी का दूसरा दिन। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में इस संदर्भ में जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय-जोधपुर के डीन प्रोफेसर धर्मचंद्र जैन, एलडी इंस्टीट्यूट-अहमदाबाद के प्रोफेसर जितेन्द्र भाई शाह, लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय-दिल्ली के प्रोफेसर रमाकांत शुक्ल, लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय दिल्ली के प्रोफेसर वीरसागर जैन और डॉ. अनेकांत ने अपनी विचाराभिव्यक्ति दी।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में जैनागम 'ठाणं' में उल्लिखित हास्योत्पत्ति के चार कारणों की चर्चा करते हुए हास्य में विवेक रखने की प्रेरणा प्रदान की। जैन विद्वत् संगोष्ठी के संदर्भ में पूज्यप्रवर ने कहा--'जैन श्रावकाचार में इच्छा परिमाण और भोगोपभोग परिमाण--ये दो ऐसे व्रत हैं, जिनका पालन किया जाए तो अनेक समस्याओं का समाधान आसानी से हो सकता है। अनेकांत का प्रयोग किया जाए तो अनेक वैचारिक-सैद्धांतिक समस्याओं का समाधान भी हो सकता है। निरपराध की हिंसा नहीं करने का संकल्प हो तो हिंसा की समस्या का कितना समाधान हो सकता है। स्वदार संतोष व्रत हो तो ऐसी कितनी समस्याओं का समाधान हो सकता है, जो दांपत्य जीवन में कठिनाई पैदा कर देती हैं। इस प्रकार जैन धर्म के व्रतों को स्वीकार किया जाए तो अनेक समस्याएं पैदा ही नहीं होतीं और कोई समस्या पैदा हो गई हो तो उसका समाधान हो सकता है। विद्वज्जन उपस्थित हैं, उनके चिंतन से कोई अच्छा समाधान उभरता रहे, यह काम्य है।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

द्विदिवसीय जैन विद्वत् संगोष्ठी के अपराह्नकालीन सत्रों में मुनि कुमारश्रमणजी, प्रोफेसर श्री अरुण मुखर्जी, लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय-दिल्ली के प्रोफेसर वीरसागर जैन, समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी, समणी सुलभप्रज्ञाजी, समणी अमलप्रज्ञाजी व डॉ. मंजू नाहटा के वक्तव्य हुए।

अभातेयुप का ५१वां अधिवेशन : अलंकरण एवं पुरस्कार समारोह

१६ सितम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आज से अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के ५१वें अधिवेशन का शुभारम्भ हुआ। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित प्रवचनमाला के अंतर्गत आज शरीरबल और मनोबल के आधार पर पुरुष के चार प्रकारों का विवेचन किया।

कार्यक्रम में अभातेयुप के तत्त्वावधान में अलंकरण एवं सम्मान प्रदान करने का भी उपक्रम रहा। अभातेयुप के अध्यक्ष श्री बीसी भलावत ने अलंकरण-पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं का परिचय प्रस्तुत किया। अभातेयुप के उपाध्यक्ष I श्री राजेश जम्मड़, उपाध्यक्ष II श्री मुकेश गुलगुलिया और सहमंत्री I श्री पंकज डागा ने प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। अभातेयुप द्वारा प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह आदि प्रदान कर सीएनबीसी आवाज के कार्यकारी संपादक श्री अनिल सिंघवी को युवा गौरव, राजस्थान के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक श्री राजीव दासोत को आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुस्कार तथा श्री विजय कोठारी (अहमदाबाद) को आचार्य महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार प्रदान किया गया। अलंकरण एवं पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं ने अपने कृतज्ञ भावों को अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम में जीतो के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शांतिलाल कुहाड़ ने कहा--'तीर्थंकर की देशनाओं व आलोक को वर्तमान काल में प्रसारित करने वाले, धर्म और संस्कारों से जोड़ने वाले, हमें जीवन की दिशा दिखाने वाले, संत समाज के उज्ज्वल नक्षत्र, तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरणों में शत-शत वन्दन। जीतो जैसी महत्त्वपूर्ण कल्पना को जन्म देने में और इसके विचारों को रचनात्मक विचारधाराओं से जोड़ने में तेरापंथ धर्मसंघ की दिव्य दृष्टि का मुख्यतया योगदान है, इसे मैं खुले रूप से स्वीकार करता हूं। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के काल में इसकी संरचना हुई। इस धर्मसभा में उपस्थित होकर मैं अपने आपको ऋणी समझता हूं।'

पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व साध्वीवर्याजी का उद्‌बोधन हुआ। अलंकरण एवं पुरस्कार समारोह का संयोजन अभातेयुप के महामंत्री श्री विमल कटारिया ने किया।

आज सायंकाल भारत के पूर्व रेलमंत्री एवं वर्तमान राज्यसभा सांसद श्री मुकुल राय ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

१७ सितम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में साधु-साध्वियों के अतिशायी ज्ञान के चार बाधक कारणों/तत्त्वों की चर्चा की। पूज्यप्रवर ने 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान शृंखला के अंतर्गत आचार्य भिक्षु की अंतिम अवस्था का वर्णन किया।

कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के ५१ वें वार्षिक अधिवेशन के संदर्भ में प्रस्तुति का उपक्रम रहा। अभातेयुप के अध्यक्ष श्री बीसी भलावत और महामंत्री श्री विमल कटारिया ने इस संदर्भ में तथा अपने कार्यकाल की संपन्नता के संदर्भ में अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी।

आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'अखिल तेरापंथ युवक परिषद मानों तेरापंथ की सशक्त सेना है। कितने-कितने युवक सामने सामायिक में बैठे हैं तो इसे सामायिक की सेना भी कह सकते हैं। मैंने सुना कल शनिवार को सायं सात से आठ के बीच कितने युवकों ने सामायिक की थी। सामायिक जीवन का शृंगार है। युवकों में सामायिक के प्रति और विशेष रूप से शनिवार को सायं सात से आठ बजे के बीच की जाने वाली सामायिक के प्रति रुझान बना रहे। चाहे रेलवे स्टेशन पर हों, एयरपोर्ट पर हों, मकान में हों या दुकान में,

कहीं भी, यथासंभव यथानुकूलता समय की व्यवस्था बिठाकर युवक लोग शनिवार की सामायिक करने का प्रयास करें।

युवक परिषद अनेक कार्य करती है। जप का कार्य भी करती है, इस बार पर्युषण के दौरान जप का उपक्रम किया था। मैं भी जप में साथ बैठा था। कई बार लोग कहते हैं कि युवकों में धर्म के प्रति रुझान नहीं है। हमारे यहां युवकों में तो कितना रुझान है कि युवक सामायिक करते और कराते हैं, जप का अनुष्ठान करते और कराते हैं, बारह व्रत की बात को फैलाने का प्रयास करते हैं। ब्लड डोनेट आदि लौकिक कार्य भी कार्य करते हैं तो धर्म का अलौकिक कार्य भी करते हैं। लौकिक कार्य का भी अपना महत्त्व है। धर्म के कार्य में भी युवकों का रुझान है, रुचि है, यह खास बात है।

तेरापंथ युवक परिषद हमारे समाज की एक अच्छी उपलब्धि है। मानों यह गुरुदेव तुलसी के प्रताप से प्राप्त हुई है। पदमचंदजी पटावरी विकास परिषद के सदस्य हैं, कभी ये अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष थे। युवक परिषद के सदस्य खूब कार्य करें, अपनी शक्ति का खूब अच्छा विकास करें। व्यर्थ बातों में न जाकर, अच्छा काम करें। अपनी शक्ति को अच्छे कार्यों में लगाने का प्रयास करें। शक्ति अच्छे कार्यों में लगेगी तो अच्छी निष्पत्ति आ सकेगी। युवकों में अच्छा उत्साह दिख रहा है। खूब अच्छा काम करें और प्रसन्न रहे। धर्मसंघ और समाज की यथांसभव आध्यात्मिक-धार्मिक सेवा और खुद की आत्मा के भी कल्याण के प्रति भी जागरूक रहने का प्रयास करें, मंगलकामना।'

आचार्यप्रवर ने अभातेयुप के अध्यक्ष श्री बालचन्द भलावत के द्विवर्षीय कार्यकाल की संपन्नता के संदर्भ में कहा--'बालजी ने दो साल का समय दिया है, कार्य किया है, आगे भी जितना हो सके विभिन्न क्षेत्रों में धार्मिक-आध्यात्मिक खूब अच्छा कार्य करने का प्रयास हो और आगे जिन्हें जिम्मा मिले, वे भी खूब अच्छा कार्य करें।'

पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व कार्यक्रम में साध्वीवर्याजी का उद्‌बोधन हुआ। पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य में आज आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान का २०वां वार्षिक अधिवेशन समायोजित हुआ। इस संदर्भ में शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री लूणकरण छाजेड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आज आइपीएस ऑफिसर श्री सुरेश कुमार ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। जापानी कंपनी रोहटो फार्मा के चेयरमेन और सीइओ श्री कुनिओ यामादा, एक्ज्यूक्यूटिव वाइस प्रेसिडेंट श्री लेख जुनेजा और भारत के बिजनेस हेड श्री सुजकी सान ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। प्राप्त जानकारी के अनुसार इस कंपनी की शाखाएं ११० देशों में फैली हुई हैं।

श्री विमल कटारिया अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष निर्वाचित

आज रात्रि में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद की वार्षिक साधारण सभा आयोजित हुई। जिसमें चुनाव अधिकारी श्री पदमचन्द पटावरी ने सह चुनाव अधिकारी श्री सुखराज सेठिया की उपस्थिति में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के आगामी कार्यकाल (२०१७-२०१९) के अध्यक्ष के रूप में श्री विमल कटारिया (बैंगलुरु) के निर्वाचन की घोषणा की। नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री कटारिया, निवर्तमान अध्यक्ष श्री बी. सी. भलावत ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

१८ सितम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में वक्रता और ऋजुता के आधार पर चार प्रकार के पुरुषों की व्याख्या की। अपने आगमाधारित प्रवचन के उपरान्त पूज्यप्रवर ने 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान शृंखला के अंतर्गत परम पूज्य

आचार्य भिक्षु की अंतिम शिक्षाओं का वर्णन किया। कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व साध्वीवर्याजी का उद्‌बोधन हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के उपरान्त परम पूज्य आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में अभातेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष श्री बी.सी. भलावत ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री विमल कटारिया को शपथ ग्रहण करवाई। तदुपरान्त श्री कटारिया ने अपने साथी पदाधिकारियों, कार्यकारिणी आदि की घोषणा की। उनके द्वारा मनोनीत पदाधिकारी इस प्रकार हैं-उपाध्यक्ष I श्री मुकेश गुगलिया, उपाध्यक्ष II श्री पंकज डागा, महामंत्री श्री संदीप कोठारी, सहमंत्री I श्री रमेश डागा, सहमंत्री II श्री अभिनन्दन नाहटा, कोषाध्यक्ष श्री नवीन बैंगानी, संगठन मंत्री श्री पवन मांडोत।

इस अवसर पर आचार्यप्रवर ने नवगठित टीम को मंगलपाठ सुनाते हुए आशीर्वाद की भाषा में कहा-- 'शुभं भूयात्, कल्याणमस्तु।'

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के ५१वें अधिवेशन में करीब २०० शाखाओं के लगभग २५०० युवक संभागी बने। संभागियों को मुनि दिनेशकुमारजी, तेरापंथ युवक परिषद के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेशकुमारजी और मुनि नयकुमारजी ने प्रशिक्षण दिया। 'संकल्प फॉर एक्सीलेंस' थीम पर आधारित इस अधिवेशन के विभिन्न सत्रों में सीएनबीसी आवाज के कार्यकारी संपादक श्री अनिल सिंघवी, कोटक मिच्युअल फंड के सीईओ श्री निलेश शाह, एक्सिस सिक्युरिटीज के सीइओ श्री अरुण ठुकराल, श्री बसंत माहेश्वरी, श्री मनोज सिन्हा और जीतो के प्रेसिडेंट श्री शांतिलालजी कुहाड़ के वक्तव्य हुए। अधिवेशन के प्रथम दिन अर्थात् शनिवार को सांय सात से आठ बजे के बीच सामूहिक सामायिक का उपक्रम भी रहा। इस उपक्रम का संचालन श्री सूर्यप्रकाश श्यामसुखा ने किया। दूसरे दिन रात्रि में 'सरगम' नामक कार्यक्रम में श्री मनीष पगारिया और 'सरगम' के दस फाइनलिस्ट संगायकों ने प्रस्तुति दी।

जगन्नाथपुरी के राजा द्वारा पुरी पधारने की पुरजोर प्रार्थना

आज सायंकाल जगन्नाथ मंदिर-पुरी के मुख्य ट्रस्टी व लोक परंपरानुसार पुरी के जनमान्य राजा श्री गजपति दिव्यसिंह देव ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। वे करीब बीस मिनिट तक पूज्य सन्निधि में उपस्थित रहे तथा पूज्यप्रवर से पुरी पधारने की पुरजोर प्रार्थना करते हुए उन्होंने पूज्यप्रवर के समक्ष उड़ीसा से संबद्ध जैनधर्म के इतिहास के विषय में अपनी अवगति प्रस्तुत की।

जीवन के तेरहवें वर्ष में बालयोगी मुनि प्रिंसकुमारजी ने की पन्द्रह की तपस्या

आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मंगल पाठ एवं विविध मंत्रों का उच्चारण कर बालयोगी मुनि प्रिंसकुमारजी को पन्द्रह की तपस्या का प्रत्याख्यान करवाया। उल्लेखनीय है कि बालमुनि वर्तमान में तेरहवें वर्ष में हैं। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के चारित्रात्माओं में इतनी कम अवस्था में पन्द्रह की तपस्या करना संभवतः कीर्तिमान है। पूज्यप्रवर से करीब नौ वर्ष की अवस्था में दीक्षित होने वाले बालमुनि प्रिंसकुमारजी ने गत वर्ष पूज्यप्रवर के सान्निध्य में अठाई की तपस्या की थी। संभवतः वह भी चारित्रात्माओं में तपस्या का कीर्तिमान था।

१६ सितम्बर को प्रातः सूर्योदय के उपरान्त पन्द्रह की तपस्या के पारणे से पूर्व बालमुनि पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हुए। मुनिवृंद ने गीत के द्वारा उनके तप की अनुमोदना की। मुख्यमुनिश्री ने बालमुनि की तपस्या के संदर्भ में स्वरचित गीत का संगान किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने इस अवसर पर अपने बालयोगी को लिखित रूप में मंगल संदेश प्रदान

किया। जिसकी भाषा इस प्रकार है--

१६.०६.२०१७
आश्विन कृष्णा चतुर्दशी

अर्हम्

बालयोगी मुनि प्रिंसकुमार!

तुमने अपने जीवन के तेरहवें वर्ष में पन्द्रह की तपस्या (पखवाड़ा) सम्पन्न की है। इतनी छोटी वय में पन्द्रह की तपस्या जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के चारित्रात्माओं के इतिहास में संभवतः विरल अथवा प्रथम घटना हो सकती है। अन्य कोई उदाहरण ध्यान में नहीं आ रहा है। अतः बालयोगी की यह तपस्या 'स्वर्णाक्षरों' में लेखनीय मानी जा रही है व इस पत्र को 'आध्यात्मिक स्वर्ण पदक' के रूप में माना जा सकता है।

राजरहाट, कोलकाता **आचार्य महाश्रमण**

तत्पश्चात् आचार्यप्रवर ने बालमुनि को तप के पारणे हेतु ग्रास बक्साया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने पारणा के उपरान्त बालमुनिश्री के लिए कुछ पद्य बनाए जो इस प्रकार हैं--

अर्हम्

१६.०६.२०१७
राजरहाट

बालयोगी मुनि प्रिंसकुमारजी!

भाग्यवान मुनि प्रिंस! तुम, पाया तेरापंथ।
पावन सन्निधि सुगुरु की, बनो विचक्षण संत।।१।।
स्वर्णाक्षरमंडित मिला, स्वर्ण पदक परिपत्र।
परम अनुग्रह देव का, मिला सुरक्षा-मंत्र।।२।।
मस्त साधना में रहो, करो ज्ञान कंठस्थ।
सद्गुरु चरण-सरोज में, बनो शिलीमुख स्वस्थ।।३।।
कीर्तिमान तप का गढ़ा, छोटी वय में भव्य।
महाश्रमण युग के बनो, मुने! तपस्वी नव्य।।४।।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

श्रेष्ठ है तेरापंथ की आचार्य परंपरा

१६ सितम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने मंगल प्रवचन में चार प्रकार के आहारों (अशन, पान-खादिम, स्वादिम) की चर्चा करते हुए भोजन में संयम और विवेक रखने की प्रेरणा प्रदान की।

आचार्यप्रवर ने चतुर्दशी के अवसर पर हाजरी के संदर्भ में उपस्थित साधु-साध्वियों को पावन संबोध प्रदान करते हुए कहा--'आहार के समय यथासंभव मौन रहना चाहिए। मुखवस्त्रिका बिना बोलने से खुले मुंह बोले जाने की संभावना बन सकती है। आहार के समय मुखवस्त्रिका के बिना बोलना आवश्यक हो तो मुंह के आगे अच्छी तरह हाथ लगाकर बोलना चाहिए। अंगुलियों की अपेक्षा हथेली को मुंह से सटाकर

बोलना चाहिए। आहार के सिवाय अन्य समय में भी खुले मुंह नहीं बोलना चाहिए। इस दृष्टि से जागरूकता रहनी चाहिए।

यदि संभव हो सके तो चारित्रात्माओं को मध्याह्न दो बजे के बाद प्रायः नहीं सोना चाहिए। दो बजे से पहले-पहले विश्राम किया जा सकता है, किन्तु दो बजे के बाद यथासंभव विश्राम नहीं चलना चाहिए। विशेष परिस्थिति के सिवाय जीवनशैली का यह क्रम बन जाए तो अच्छा रहे। साझ में कोई एक साधु/साध्वी अपने- अपने साझ के शेष साधुओं/साध्वियों को जगाने वाला होना चाहिए कि समय हो गया है, उठ जाओ।'

हाजरी वाचन के उपरान्त बालमुनि विवेककुमारजी, मुनि नमनकुमारजी, मुनि पार्श्वकुमारजी और मुनि केशीकुमारजी ने लेखपत्र उच्चरित किया। आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व कार्यक्रम में साध्वीवर्याजी का उद्‌बोधन हुआ। रायपुर से समागत श्री महेन्द्र धाड़ीवाल ने पूज्यप्रवर के सम्मुख भावाभिव्यक्ति दी।

छत्तीसगढ़ के बीस सूत्रीय क्रियान्वयन समिति के प्रदेश उपाध्यक्ष साधुमार्गी समाज के वरिष्ठ व्यक्ति श्री खूबचंद पारख ने अपने वक्तव्य में कहा--'मैं बहुत भाग्यशाली हूं कि मुझे आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महापुरुष के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरी बहुत इच्छा थी कि मैं आचार्यश्री के दर्शन करूं। बहुत सुना था मैंने कि हमारे जैन समाज में आचार्य तो अनेक हैं, किन्तु तेरापंथ एक श्रेष्ठ परंपरा है। क्योंकि यहां एक आचार्य के नेतृत्व में पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ पूरा संघ चलता है। आज जैन समाज को एकता की आवश्यकता है। आचार्यश्री ने संवत्सरी एकता का जो एलान किया है, वह वस्तुतः बहुत बड़ी उदारतापूर्ण पहल है। मैं आपको कोटि-कोटि नमन करता हूं।'

रायपुर ऋषभदेव जैन मंदिर के अध्यक्ष श्री तिलोकचंद बरड़िया ने कहा--'गुरुदेव महाश्रमणजी द्वारा दिए गए संवत्सरी एकता के आह्‌वान की जितनी तारीफ की जाए, कम है। आचार्यश्री के मार्गदर्शन में हम इस तरह कदम दर कदम बढ़ते जाएं तो हमें मंजिल निश्चित मिलेगी। तेरापंथ का अनुशासन देखकर मुझे जैनी होने पर और अधिक गर्व हो रहा है।'

जगलदलपुर विधानसभा के विधायक श्री संतोषजी बाफणा ने कहा--'आज आपके दर्शन कर मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूं। आपके दर्शनों की लालसा वर्षों से थी, किन्तु आज आपके दर्शन कर मैं धन्य हुआ। तेरापंथ समाज में अनुशासन का साक्षात् रूप देखने को मिलता है।'

अखिल भारतीय दिगम्बर जैन समाज के उपाध्यक्ष श्री प्रकाशचंद बाकलीवाल ने कहा--'आचार्यश्री ने जैन संवत्सरी एकता की जो बात की, मैं उसकी अनुमोदना करता हूं।'

उत्तर रायपुर के विधायक श्री श्रीचंद सुन्दरानी ने कहा--'छत्तीसगढ़ एक ऐसी धरती है, जहां हम सभी धर्मों के लोग मिल-जुलकर रहते हैं। आचार्यश्री महाश्रमणजी को टेलिविजन में तो हमेशा देखते थे, किन्तु आज आपके प्रत्यक्ष दर्शन कर स्वयं को धन्य समझता हूं। आपका आशीर्वाद हम सब पर और संपूर्ण छत्तीसगढ़ पर बना रहे।'

बन्धनमुक्त बनें

२० सितम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जैन आगमों और अन्य ग्रंथों में कर्मवाद का सूक्ष्म विवेचन प्राप्त होता है। कर्मवाद एक मौलिक सिद्धांत है कि प्राणी जो कर्म करता है, उसे उसका फल मिलता है। जीव को सुख-दुःख मिलता है, उसका कारण है-कर्म। कोई जीव नरक में जाता है, कोई पशु-पक्षी बनता है, कोई मनुष्य बनता है और कोई देव बनता है, इसकी पृष्ठभूमि में कर्मों का योगदान रहता है।

बन्ध का मतलब है दो का जुड़ना। प्रस्तुत प्रसंग में जीव और कर्म पुद्गलों का जुड़ जाना बन्ध होता है। कर्मवाद के संदर्भ में बन्ध के चार प्रकार बताए गए। उनमें पहला है-प्रकृति बंध। कौन सा कर्म कैसा फल देगा, यह सब कर्मों का अपना-अपना स्वभाव होता है। कोई ज्ञान पर आवरण डालता है, कोई कार्य में बाधा पैदा करता है, कोई वेदना देता है, इस प्रकार सब कर्मों का अपना-अपना स्वभाव है। यह प्रकृति बन्ध है। कौन सा कर्म कितने समय तक आत्मा के साथ बन्धा हुआ रहेगा, कब उसका फल मिलेगा आदि कालमान का निर्धारण स्थिति बंध है। बन्ध का तीसरा प्रकार है-अनुभाग बंध। कौन सा कर्म कितनी तीव्रता अथवा मन्दता के साथ में फल देगा, इसकी निर्धारणा अनुभाग बंध है। बंध का चौथा प्रकार है-प्रदेश बंध। न्यूनाधिक-परमाणु वाले पुद्गलों के स्कंधों का जो जीव के साथ जो संबंध होता है, वह प्रदेश बंध होता है।

इन चार प्रकार के बंधों को एक मोदक के उदाहरण से समझाया गया है। कोई मोदक पित्तहर होता है, कोई मोदक वातहर है, कोई मारक तो कोई उन्मादक होता है, वैसे ही कर्मों की अपनी-अपनी प्रकृति होती है। कोई मोदक चार दिन तक ठीक रहता है, कोई दो दिन तक खाने योग्य रहता है, सबका अपना-अपना कालमान होता है। इसी प्रकार कर्मों का भी अपना-अपना कालमान होता है। एक मोदक की मिठास बहुत ज्यादा होती है और एक की कम होती है। इसी प्रकार कर्मों के विपाक की अपनी-अपनी तीव्रता अथवा मंदता होती है। एक मोदक वजन में भारी होता है, एक हल्का होता है। इसी प्रकार कर्मों की अपनी-अपनी सघनता व अल्पता होती है।

आत्मा में राग-द्वेष रूपी चिकनाहट है, इसलिए कर्म आत्मा के साथ बद्ध होते हैं। वीतराग के कर्म बंधते हैं, किन्तु वे नाम मात्र के होते हैं। क्योंकि वे राग-द्वेष मुक्त होते हैं। वीतराग में बंधने वाले कर्म ज्यादा देर टिकते नहीं, शीघ्र झड़ जाते हैं।'

आचार्यप्रवर ने कर्म बंध के कारणों की व्याख्या भी की। पूज्यप्रवर ने 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान शृंखला के अंतर्गत आचार्य भिक्षु द्वारा 'कच्ची हाट' से 'पक्की हाट' पदार्पण, अनशन ग्रहण तथा उनके अनशन से संबंधित घटना-प्रसंगों का वर्णन किया। पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व कार्यक्रम में साध्वीवर्याजी का उद्बोधन हुआ।

क्षमाशूर, तपःशूर, दानशूर और युद्धशूर बनो

२१ सितम्बर। आश्विन शुक्ला प्रतिपदा। नवरात्र का प्रारम्भ। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परमाराध्य आचार्यप्रवर के साथ चतुर्विध धर्मसंघ ने निर्धारित जप अनुष्ठान किया। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन में शक्ति का बहुत महत्त्व होता है, जो व्यक्ति कमजोर है, वह दयनीय बन जाता है। शक्तिशाली बन जाना अपने आप में गौरव की बात होती है, परन्तु हमारी शक्ति किसी को दुःख देने के लिए नहीं, किसी का दुःख दूर करने के लिए, किसी को शांति पहुंचाने के लिए, किसी का कल्याण करने के लिए प्रयुक्त हो, यह अपेक्षित है।

दुनिया में चार प्रकार के शूर बताए गए हैं, उनमें पहला है-क्षमाशूर। क्षमा वीर का भूषण होता है। कुछ लोग तो इतने कमजोर होते है कि वे पुनः कुछ बोल नहीं सकते, मुकाबला नहीं कर सकते, वे तो दयनीय व्यक्ति हैं, निम्न श्रेणी के लोग हैं। क्योंकि उनमें मुकाबला करने की शक्ति ही नहीं है। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनमें शक्ति होती है और जो वापस मुकाबला भी करते हैं, वे मध्यम कोटि के व्यक्ति होते हैं। उत्तम कोटि के लोग वे होते हैं, जिनमें शक्ति होती है, किन्तु वे मुकाबला नहीं करते, शांति रखते हैं। दस धर्मों में पहला है-क्षमा धर्म। सक्षमता होने पर भी मुकाबला नहीं करना, क्षमा धारण कर लेना, वीरता है। अर्हत क्षमाशूर होते हैं। वे बहुत सहन कर लेते हैं। भगवान महावीर के साधना काल में कितने-कितने उपसर्ग और

कठिनाइयां आईं। तिर्यंचकृत, मानवकृत और देवताकृत कठिनाइयां उनके सामने आईं। वे उनमें क्षमाशील रहे। इस प्रकार अर्हत क्षमाशूर होते हैं।

दूसरा शूर होता है--तपः शूर। अनगार तपःशूर होता है। अनगार के सर्वसावद्य योग का त्याग होता है, इसलिए उसकी हर क्रिया तपस्या हो सकती है। जिंदगी भर रात्रि में पानी भी नहीं पीना कितनी बड़ी साधना होती है। सामान्यतया गृहस्थ तपस्या में साधु की बराबरी नहीं कर सकता है। साधु को तपोधन कहा गया है। तपस्या जिसका धन है, वह तपोधन होता है।

तीसरा शूर होता है--दानशूर। वैश्रवण/कुबेर दानशूर होता है। हिन्दी शब्दकोष में कुबेर का अर्थ किया गया है-उत्तर दिशा का अधिष्ठाता और धन-समृद्धि का स्वामी।

चौथा शूर होता है--युद्धशूर। वासुदेव युद्धशूर होता है। वासुदेव वीर पुरुष होता है। यह भी एक तथ्य है कि वासुदेव की अगली गति नरक होती है।

आदमी को यथासंभव अपने व दूसरों के कल्याण में अपनी शक्ति का नियोजन करना चाहिए। दुर्भावना से दूसरों को दुःख देने में उसका प्रयोग नहीं करना चाहिए। आदमी का यह संकल्प हो 'मैं अपनी शक्ति का उपयोग दुर्भावना से दूसरों को दुःख देने में नहीं, यथासंभव दूसरों के कल्याण में करूंगा।' इस संकल्प के बाद शक्ति के विकास का प्रयास किया जाए, यह वांछनीय है। आदमी को क्षमा धारण कर क्षांतिशूर, तपस्या कर तपःशूर, निरवद्यदान में दानशूर और अपनी आत्मा से युद्ध कर युद्धशूर बनने का प्रयास करना चाहिए।'

आचार्यप्रवर ने अपने आगमाधारित प्रवचन के उपरान्त 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान शृंखला के क्रम को आगे बढ़ाया। पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व साध्वीवर्याजी का उद्‌बोधन हुआ।

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित चिन्मय मिशन के स्वामी चैतन्यानंदजी ने कहा--'यह मेरा परम सौभाग्य है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन का सुअवसर मिला। आचार्यश्री ने अपनी पुस्तक 'सुखी बनो, विजयी बनो और संपन्न बनो' में जैन आगमों और श्रीमद्‌भगवदगीता का सार भर दिया है। मैं उनके चरणों में प्रणाम करता हूं।'

शक्कर जैसे मीठे बनो

२२ सितम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'फल चार प्रकार के होते हैं। कोई-कोई फल आंवले की तरह ईषत्-मधुर अर्थात् थोड़ा मीठा होता है। कोई फल बहु मीठा होता है, वह द्राक्षा की तरह मीठा होता है। कोई फल बहुतर मधुर होता है, वह दूध की तरह मधुर होता है और कोई फल बहुतम मीठा होता है, वह शर्करा की तरह होता है। इन चार प्रकार के फलों की तरह आचार्य भी चार प्रकार के होते हैं। आचार्य संघ के अनुशास्ता होते हैं। ज्ञान व आचार के नियामक होते हैं और ज्ञान प्रदायक भी होते हैं। किसी आचार्य में मधुरता कम होती है, वे डांट देते हैं, लोगों के बीच किसी को उलाहना दे देते हैं, झिड़क देते हैं। वे आचार्य आंवले की तरह थोड़ी मिठास वाले होते हैं।

कोई-कोई आचार्य ज्यादा नहीं डांटते, वे द्राक्षा मधुर फल के समान बहुत मधुर होते हैं। कोई-कोई आचार्य और भी कम डांटते हैं, वे दुग्ध मधुर फल के समान बहुतर मधुर होते हैं। कोई-कोई आचार्य शर्करा मधुर फल के समान बहुतम मीठे होते हैं। वे उपशांत होते हैं।

आचार्य की अपनी-अपनी शैली और स्वभाव हो सकता है, वे पूजनीय और सम्मानीय होते हैं, तीर्थंकर के प्रतिनिधि होते हैं।'

आचार्यप्रवर ने 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान शृंखला के क्रम को आगे बढ़ाया। कार्यक्रम में आचार्यप्रवर ने नवरात्र के संदर्भ में निर्धारित अनुष्ठान भी करवाया। आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व साध्वीवर्याजी का उद्‌बोधन हुआ।

श्रावक के चार प्रकार

२३ सितम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने 'ठाण' आगमाधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जो गृहस्थ श्रमणों की उपासना करता है, वह श्रमणोपासक कहलाता है। श्रमणोपासक का पर्यायवाची नाम है श्रावक। सारे श्रावक एक समान नहीं होते। उनमें तारतम्य होता है।

श्रावक चार प्रकार के होते हैं। प्रथम प्रकार के श्रावक माता-पिता के समान होते हैं। वे साधुओं की चिंता करने वाले होते हैं। साधुओं के प्रति स्नेह, श्रद्धा का भाव रखने वाले होते हैं। साधुओं को आहार, औषध, स्थान आदि की उपलब्धि हुई या नहीं, इसका ध्यान रखने वाले होते हैं। जैसे वर्षा आ रही हो, उस समय जागरूकता रखना कि जब तक साधुओं की गोचरी न हो तब तक मैं भोजन न करूं। कुछ-कुछ श्रावक भक्तिमान होते हैं और वे वत्सलता के साथ साधुओं का अध्यापन करते हैं। इस प्रकार जो श्रावक साधुओं के संयम जीवन की चिंता करते हैं, उन्हें देखकर माता-पिता की तरह प्रसन्न होते हैं और उन्हें वत्सलता के साथ तत्त्वज्ञान सिखाने वाले होते हैं। इस प्रकार के श्रावक माता-पिता के समान होते हैं।

जो श्रावक साधुओं के प्रति आहार आदि में वत्सलता रखते हैं, किन्तु ज्ञानचर्चा में कुछ उग्रता कर लेते हैं, वे श्रावक भाई के समान होते हैं।

तीसरे प्रकार के श्रावक मित्र के समान होते हैं। ऐसे श्रावक अवसरवादी होते हैं। साधु ध्यान रखते हैं, तब तक वे श्रावक भी उनका ध्यान रखते हैं, किन्तु साधु ध्यान न रखे तो वे साधुओं के पास आना छोड़ देते हैं। उनके प्रति वत्सलता नहीं रखते।

चौथे प्रकार के श्रावक सपत्नी (सौत) के समान होते हैं। वे साधुओं से ईर्ष्या करते हैं, उनका ध्यान नहीं रखते, गोचरी में जागरूकता नहीं रखते, तत्त्वज्ञान में भी रुचि नहीं लेते। वे केवल साधुओं के दोष देखने का प्रयास करते हैं।

जैन शासन में चतुर्विध धर्मसंघ है। साधु-साध्वी श्रावक-श्राविका। साधु-साध्वियां उम्र में छोटे हों तो भी वे श्रावक-श्राविकाओं के लिए वंदनीय होते हैं। श्रावक-श्राविकाएं उम्र और ज्ञान में छोटे साधु-साध्वियों से बड़े भी हो सकते हैं। ऐसे श्रावक-श्राविकाएं साधु-साध्वियों के अभिभावकरूप हो सकते हैं। साधु-साध्वी, श्रावक- श्राविका जैन शासन रूपी प्रासाद के चार स्तंभ हैं। प्रासाद को टिकाए रखने के लिए चारों स्तंभ बड़े उपयोगी होते हैं। जिस श्रावक में यथार्थ, देव, गुरु और धर्म के प्रति दृढ़ श्रद्धा का भाव हो, विवेक, आचार और तत्त्वज्ञान भी हो, वह एक अच्छा श्रावक होता है और वह भवसागर को तरने की दिशा में आगे बढ़ सकता है।'

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान शृंखला के अंतर्गत आचार्य भिक्षु के महाप्रयाण का वर्णन किया। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश 'म्हानै सिरियारी रो संत प्यारो-प्यारो लागे' गीत का आंशिक संगान भी किया। आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन से पूर्व नवरात्र के संदर्भ में निर्धारित अनुष्ठान करवाया। साध्वीवर्याजी ने आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व जनता को उत्प्रेरित किया।

वह कार्य करो, जिसका परिणाम अच्छा हो

२४ सितम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने

पावन प्रवचन में कहा--'मनुष्य के पांच इन्द्रियां होती हैं। उनमें से चार इन्द्रियों के विषय स्पृष्ट होकर वेदित होते हैं। जैसे-शब्द कान में जाएंगे, तब उनका ज्ञान होगा। गंध नाक में जाएगी, तब उसका ज्ञान होगा। रस जब जिह्वा का स्पर्श करेगा, तब उसके स्वाद का ज्ञान हो सकेगा। इसी प्रकार स्पर्शनेन्द्रिय का विषय भी त्वचा का स्पर्श करता है, तब उसका ज्ञान होता है। इस तरह ये चारों इन्द्रियां अपने-अपने विषय का स्पर्श कर उसका ज्ञान करवाती हैं।

चक्षुरिन्द्रिय का विषय उससे स्पृष्ट हुए बिना ज्ञात हो जाता है। चार इन्द्रियां विषय को प्राप्त कर उसका ज्ञान करती हैं, वे प्राप्यकारी हैं और चक्षुरिन्द्रिय अप्राप्यकारी है।

इन्द्रियां बाह्य जगत के ज्ञान का माध्यम बनती हैं। इन्द्रियों के द्वारा भोग भी होता है। इन्द्रियों के द्वारा भोग का संयम करना साधना होती है। आदमी इन्द्रिय विषयों में आसक्त बन जाता है तो वे उसका आध्यात्मिक पतन करने वाली बन जाती हैं। इन्द्रियों का उपयोग करना होता है, किन्तु उनके उपयोग में आसक्ति नहीं रखनी चाहिए। इन्द्रिय विषय तात्कालिक रूप में भले अच्छे लगें, किन्तु उनका परिणाम अच्छा नहीं होता। आदमी को वह कार्य करना चाहिए, जिसका परिणाम अच्छा हो। इन्द्रियों का संयम कल्याणकारी होता है।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान शृंखला के अंतर्गत आचार्य भिक्षु के महाप्रयाण के बाद की स्थिति का वर्णन किया। आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन से पूर्व नवरात्र के संदर्भ में निर्धारित अनुष्ठान करवाया। साध्वीवर्याजी ने आचार्यप्रवर के पदार्पण से पहले जनता को प्रेरणा दी। श्रीमती कल्पना दुगड़ व श्रीमती अर्चना चोरड़िया ने गीत का संगान किया।

हावी न हो बीमारी

२५ सितम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'तीन शब्द हैं--व्याधि, आधि और उपाधि। शारीरिक बीमारी को व्याधि, मानसिक व्यथा को आधि और भावात्मक बीमारी को उपाधि कहा जाता है। व्याधि चार प्रकार की होती है--

१. वात्तिक-वायु विकार से उत्पन्न होने वाली बीमारी।
२. पैत्तिक-पित्त विकास से उत्पन्न होने वाली बीमारी।
३. श्लैष्मिक-श्लेष्य विकार से उत्पन्न होने वाली बीमारी।
४. सान्निपात्तिक-बात, पित्त और श्लेष्य-तीनों के समिश्रण से होने वाली बीमारी।

शरीर के लिए कहा गया--'शरीरं व्याधि मंदिरम्।' शरीर में किस समय क्या बीमारी उत्पन्न हो जाए, कहना मुश्किल होता है। आदमी को पूर्वकृत कर्मों को भोगना होता है। उन्हें भोगने का एक तरीका है बीमारी। आदमी को यह सोचना चाहिए कि जब तक शरीर स्वस्थ है, तब तक निरवद्य सेवा और साधना कर अधिकाधिक कर लूं।

बीमारी हो जाए तो आदमी को उसमें समताभाव और मनोबल रखना चाहिए, मन में शांति रखना चाहिए, संत्रस्त नहीं बनना चाहिए। मनोबल होता है तो बीमारी ज्यादा हावी नहीं होती। बीमारी हावी हो जाती है तो आदमी संभव कार्य भी नहीं कर पाता। बीमारी के साथ उचित रूप में मैत्री कर लेनी चाहिए। बीमारी की स्थिति में भी जो कार्य किया जा सकता है, उसे करने में आलस्य नहीं करना चाहिए। आदमी यथासंभव और यथोचित रूप में परावलंबन से बचना चाहिए। स्वावलंबी व्यक्ति एक दृष्टि से सुखी होता है। बीमारी की स्थिति में भी यथासंभव परावलंबी न बनना अच्छा होता है। बीमारी में समता भाव रखने से कर्म निर्जरा का लाभ मिलता है। आदमी बीमारी में जांच, औषधि आदि के रूप में बाह्य चिकित्सा करवा सकता है, उसके

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/15-17 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2015-2017
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

साथ आध्यात्मिक चिकित्सा--कायोत्सर्ग, ध्यान, स्वाध्याय और जप भी करनी चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के उपरान्त 'तेरापंथ प्रबोध' आख्यान शृंखला के क्रम को आगे बढ़ाया। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश 'सन्तां! शासण ओ स्वामीजी रो, जग में अनमोल हीरो....' गीत का आंशिक संगान किया। आचार्यप्रवर ने नवरात्र के संदर्भ में निर्धारित जप का अनुष्ठान भी करवाया। आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व साध्वीवर्याजी का उद्बोधन हुआ।

स्मारणा

- संसारपक्षीय ज्ञाति साधु-साध्वियों के अतिरिक्त किसी भी साधु-साध्वी के नामोल्लेख पूर्वक चतुर्मास की प्रार्थना न की जाए।
- सामान्यतया चारित्रात्माओं के चतुर्मास के लिए निवेदन सभा के माध्यम से ही किया जाए, जहां सभा न हो तो वहां अन्य संगठनमूलक संस्था भी निवेदन कर सकेगी।
- किसी उपनगर में चतुर्मास करवाना हो तो उस उपनगर से संबद्ध उपनगरीय सभा द्वारा आचार्यप्रवर के पास निवेदन पहुंचाया जाए। यदि उपनगरीय सभा चतुर्मास व्यवस्था में कठिनाई का अनुभव करे और महानगरीय सभा उस उपनगर के चतुर्मास की व्यवस्था संभालने की इच्छुक हो तो महानगरीय सभा के द्वारा भी उस उपनगर के चतुर्मास के लिए निवेदन किया जा सकेगा।

(श्रावक संदेशिका ३१-३३)

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

११०००/- स्व. श्रीमती लक्ष्मीदेवी दूगड़ (धर्मपत्नी श्री सम्पतमल दूगड़) की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र सुरेन्द्र, नवीन दूगड़, सरदारशहर-जोरहाट, कुबेर मारुति हाउस दिल्ली द्वारा प्रदत्त।

४१००/- न्यू अलीपुर श्रावकगण कोलकाता द्वारा २० जून को आध्यात्मिक दिवस सम्पन्न होने पर प्रदत्त।

२१००/-स्व. अशोककुमार सेमलानी (सुपुत्र स्व. धनराजी सेमलानी, चाणोद-सिमोगा) की पुण्य स्मृति में सेमलानी परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/-स्व. श्रीमती धापूबाई एवं स्व. शोभालालजी छाजेड़ (देवगढ़ मदारिया-मुम्बई) की स्मृति में बाबूलाल, अशोकुमार, कन्हैयालाल, राजेश, मुकेश, राकेश, महेश, सुरेश, पीयूष, नयन, अभिनव, वीर छाजेड़ द्वारा प्रदत्त।

२१००/-स्व. चुन्नीलालजी मेहता की सोलहवीं पुण्यतिथि पर उनके सुपुत्र बाबूलाल, सुपौत्र संजय, देवेन्द्र, विकास, प्रपौत्र विवेक प्रपौत्री अनिषा, दिया एवं समस्त मेहता परिवार, झालों की मदार-डोंबीवली द्वारा प्रदत्त।

२१००/-श्री भंवरलाल पोरवाल (उदयपुर) के ६०वें वर्ष में प्रवेश के अवसर पर मातुश्री बसंतीदेवी पोरवाल, करदावाला द्वारा प्रदत्त।

पत्र व्यवहार की दृष्टि से हमारा पता है--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ फोन नं-०७३८४४३६५७२, ०९७८४४०७४६१
दिल्ली कार्यालय का नं.-२३२३४६४१, ९३१०२३४६४१

●

स्वामी आदर्श साहित्य संघ के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक हेमराज बैद के द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-६, नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२ से मुद्रित एवं आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२ में प्रकाशित। सम्पादकः केशवप्रसाद चतुर्वेदी